**Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,**
*Online ISSN 2278-8808, SJIF 2018 = 6.371, www.srjis.com*
*PEER REVIEWED & REFERRED JOURNAL, MAY-JUNE, 2019, VOL- 6/51*

# पं0 दीनदयाल उपाध्याय : राष्ट्रवाद और भारतीय राजनीति

**अन्जू यादव , Ph.D.**

**Abstract**

*पं. दीनदयाल उपाध्याय भारत में लोकतंत्र के उन पुरोधाओं में से एक हैं लिन्हों ने भारत में एकात्म राष्ट्रवादी राजनीति को जन्म दिया। प्रस्तुत शोधपत्रा के कुछ विशेष प्रसंगों में पं. दीनदयाल उपाध्याय के राष्ट्रवादी राजनीतिक विचारों पर आधारित है, जिसके अन्तर्गत पं. दीनदयाल उपाध्याय द्वारा भारतीय राजनीति में दोषों का अन्वेषण कर सुधारात्मक आदर्श दृष्िअकोंण प्रस्तुत किया है। पं. दीनदयाल उपाध्याय* ***धर्मनिरपेक्ष राष्ट्रवाद के समर्थक थे।*** *वे इस पक्ष में थे कि निम्न मध्यम वर्गों तथा सामान्य जनता के बीच मैत्री सम्बन्ध कायम किये जायें। उनका कहना था कि साधारण जनसमुदाय अनुल्लंघनीय अधिकारों तथा लोक प्रभुत्व के सामान्य सिद्धान्तों से आकृष्ट नहीं हो सकता। उसमें वर्ग चेतना तभी उत्पन्न हो सकती है जबकि उससे आर्थिक हितों की भाषा में बात की जाय। उनकी भावना थी कि समाजवादियों को राष्ट्रीय मुक्ति संग्राम में सम्मिलित होना चाहिए। उनका कहना था कि यदि समाजवादियों ने अपने को देश में चल रहे राष्ट्रीय स्वातन्त्रय संघर्ष से पृथक रखा तो उनका यह कार्य आत्महत्या करने के समान होगा।*

***पारिभाषिक शब्दावली:****, राष्ट्रवादी राजनीति, धर्म निरपेक्ष राष्ट्रवाद, राष्ट्रीय चेतना*

*Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com*

**शोध प्ररचना** : शोध अध्ययन की प्रकृति के अनुरूप शोध कार्य को को सम्पादित करने के लिए पूर्णतः द्वितीयक तथ्यों पर आधारित वर्णनात्मक शोध प्ररचना को चुना है, जिसमें ऐतिहासिक अध्ययन पध्दति को समावेशित किया गया है, ताकि अध्ययन की प्रस्तुति सरल किन्तु तार्किक रूप में की जा सके।

*Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies*

**विवेचनाः** पं. दीनदयाल उपाध्याय के अनुसार भारतीय समाज में महान परिवर्तन होने वाले हैं, परन्तु आदर्शों से आज पथ निर्देशन नहीं हो पा रहा है। इसलिए आज नये नेतृत्व की आवश्यकता है। समाजवाद ही नया नेतृत्व प्रदान कर सकता है। जनता के विस्तृत तथा व्यापक हित के आधार पर निर्मित यह सम्पूर्ण सामाजिक सिद्धान्त ही हमारा पथ प्रदर्शन कर सकता है। जन जागरण तथा जनक्रान्ति की नीति ही समाज को समुचित विकास का साधन बना सकती है। राजनीतिक न्याय से अभिप्राय राष्ट्र में 'उचित की स्थापना करना' करने से है जिसका अर्थ है : राजनीतिक जीवन में विवेक के अनुसार आचरण करना। अन्य शब्दों में यह कहा जा सकता है कि जब कोई समाज अपने वर्गों– उपवर्गों के साथ पक्षपात रहित व्यवहार करता है तो उसे राजनीतिक न्याय कहते हैं। पं. दीनदयाल उपाध्याय के मतानुसार 'सामाजिक न्याय की अवधारणा उनके' स्वतंत्रता, समानता, और बन्धुत्व' के सिद्धान्त में समाहित है। वे वर्ण व्यवस्था और जाति व्यवस्था पर आधारित किसी भी समाज को न्यायोचित नहीं मानते हैं। उनकी स्वतंत्रता का विचार सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक सहित मानव के व्यक्तिगत जीवन तक व्याप्त है। स्वतंत्रता सामाजिक न्याय का महत्वपूर्ण अंग है। यदि समाज की रचना ही असमानता पर हुई हो तो समानता और भी अधिक आवश्यक है। सामाजिक समानता व आर्थिक समानता परस्पर घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित हैं; दोनों एक दूसरे के कार्य कारण हैं। साथ ही आर्थिक समानता, सामाजिक समानता की गारन्टी है। बन्धुत्व; पंण्डित जी के राजनीतिक न्याय की धारणा का आवश्यक अंग है। क्योंकि बन्धुत्व (भ्रातृत्व) के अभाव में स्वतंत्रता व समानता कृत्रिम हो जायेंगी। आपने लिखा है कि 'समाज में स्वतंत्रता और समानता की स्थापना कानून और संविधान के द्वारा ही की जा सकती है। किन्तु कानून के द्वारा लोगों में भाईचारे की भावना पैदा नहीं की जा सकती। इसलिए समाज में जहाँ स्वतंत्रता और समानता की प्राप्ति सरल है भ्रातृत्व का विकास कठिन है। पंण्डित जी के अनुसार स्वतंत्रता और समानता भी भ्रातृत्व के लिए ही हैं। स्वतंत्रता, समानता, भ्रातृत्व और न्याय की प्राप्ति के लिए पंण्डित जी ने जीवन भर संघर्ष किया। आपने लिखा है कि सामाजिक न्याय बगैर शिक्षा भी सम्भव नहीं है। इसलिए आपने शिक्षा के प्रसार के उद्देश्य से न्याय प्राप्ति की वकालात की है।

*Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies*

पं. दीनदयाल उपाध्याय के दृष्टिकांण से , 'भारत एक भौगोलिक नाम या प्राकृतिक भूखण्ड मात्र नहीं है, अपितु एक ऐसी शरीरधारिणी देवी और शक्तिमयी माँ है जो सदियों तक अपने पालने में करोड़ों भारतीयों को झुलाती रही है और उनका पालन पोषण करती रही है।' पं. दीनदयाल उपाध्याय करोड़ों भारतवासियों के उत्कृष्टतम तेजोमय अंशों से जन्म लेने वाले राष्ट्र की महान् शक्ति द्वारा विदेशी दासतावादी मानसिकता का अन्त करना चाहते थे। उन्होंने अपनी **राजनीतिक डायरी** नामक सुप्रसिद्ध पुस्तक में राष्ट्र के स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए लिखा था, 'राष्ट्र क्या है, हमारी मातृभूमि क्या है? वह भूखण्ड नहीं है, वाक्–विलास नहीं है और न ही मन की कोरी कल्पना है। यह एक ऐसी महाशक्ति है जो राष्ट्र का निर्माण करने वाली पवित्र कर्तव्य साधारण जनता का उत्थान करना और उसे ज्ञान देना है। हमारे बीच अनेक ऐसे महानुभाव हैं जिनकी कार्य प्रणाली गलत भले ही हो, किन्तु उनमें निष्ठा तथा विचारों की श्रेष्ठता है। मैं ऐसे महानुभवों का आह्वान करता हूँ कि वे अपने परिश्रम और शक्ति को... उन व्यापक कार्यों में लगाएं जिनसे संतप्त और उत्पीड़ित राष्ट्र को राहत मिल सके।' देश व देशवासियों के प्रति यह निष्ठापूर्ण कर्तव्य ज्ञान ही श्री दीनदयाल उपाध्याय जी का नया राष्ट्रवाद था।

श्री दीनदयाल उपाध्याय जी राष्ट्रवाद को ईश्वरीय देन व आदेश समझते थे। उनके शब्दों में, 'राष्ट्रीयता क्या है? यह केवल एक राजनीतिक कार्यक्रम नहीं है। राष्ट्रवाद तो एक सनातन धर्म है जो हमें ईश्वर से प्राप्त हुआ है। यह एक विश्वास है जिसे लेकर आपको जीवित रहना है। राष्ट्रवाद अमर है, वह मर नहीं सकता क्योंकि वह कोई मानवीय वस्तु नहीं है। ईश्वर को मारा नहीं जा सकता, ईश्वर को जेल में भी डाला नहीं जा सकता।... राष्ट्रवादी बनने के लिए, राष्ट्रीयता के इस धर्म को स्वीकार करने के लिए हमें धार्मिक भावना का पूर्ण पालन करना होगा। हमें स्मरण रखना चाहिए कि हम निमित्त मात्र हैं, भगवान् के साधन मात्र हैं।' उन्होंने लिखा था, 'हम तो केवल मातृभूमि के दिव्य रूप को पूज्य मानते हैं, किसी प्रकार के वर्तमान राजनीतिक लक्ष्य को नहीं।' इस संघर्ष में भारत माता के हित के लिए हर सन्तान को अपने सर्वस्व का बलिदान करने के लिए तैयार रहना होगा, क्योंकि उसने यह सर्वस्व उसी माता से ही प्राप्त किया है। राष्ट्रीय मुक्ति का

*Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies*

प्रयत्न एक परम यज्ञ है।... इस यज्ञ का सफल स्वतन्त्रता है जिसे हम देवी भारतमाता को अर्पित करेंगे। सप्तजिव्हा यज्ञाग्नि की ज्वालाओं में हमको अपनी और अपने सर्वस्व की आहुति देनी होगी, अपने रूधिर और प्रियजनों के सुख की भी आहुति देकर उस अग्नि को प्रज्वलित रखना होगा, क्योंकि मातृभूमि वह देवी है, जो अपूर्ण और विकलांग बलि से सन्तुष्ट नहीं होती है और अपूर्ण मन से बलिदान करने वाले को देवता कभी मुक्ति का वरदान नहीं देते हैं।'

वे समाज के किसी वर्ग के उत्पीड़न की अनुमति कभी भी देने के लिए तैयार नहीं थे। श्री अरविन्द ने वन्देमातरम् लेख में लिखा है, 'राष्ट्रवाद राष्ट्र में दैवी एकता को प्राप्त करने की उत्कट अभिलाषा है। यह एक ऐसी एकता है जिसके अन्तर्गत राष्ट्र के सभी व्यक्ति वास्तव में और बुनियादी तौर पर एक ओर समान हैं, चाहे वे अपने राजनीतिक, सामाजिक तथा आर्थिक कार्यों में कितने ही भिन्न तथा असमान क्यों न प्रतीत होते हों।

**निष्कर्षः** श्री दीनदयाल उपाध्याय जी का राष्ट्रवाद व्यापक तथा सार्वभौमिक था। उनका विचार था कि समग्र मानव में एकता एक विश्व संगठन के द्वारा स्थापित की जानी चाहिए। राष्ट्र ऐसे नागरिकों का समूह है जो एक लक्ष्य, एक मिशन व एक आदर्श के साथ जीते हैं; जो राष्ट्र को मातृभूमि मानते हैं। यदि आदर्श को मातृभूमि से पृथक कर दिया जाय तो राष्ट्र का अस्तित्व सम्भव नहीं है। वे एक ऐसे विश्व राज की कल्पना करते थे जो स्वतन्त्र राष्ट्रों द्वारा संगठित एक संघ होगा, जिसमें दासता व असमानता का नाम तक नहीं होगा, जिसमें सब स्वतन्त्र होंगे, सबको जीवनयापन की समान सुविधाएं उपलब्ध होंगी तथा सबके लिए सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक न्याय सुलभ होगा। उनके ही शब्दों में, 'उस विश्व राज का सर्वोत्तम रूप स्वतन्त्र राष्ट्रों का एक ऐसा संघ होगा जिसके अन्तर्गत हर प्रकार की पराधीनता, बल पर आधारित असमानता और दासता का विलोम हो जाएगा।' इस प्रकार श्री अरविन्द का राष्ट्रवाद संकीर्ण तथा कट्टरतापूर्ण नहीं था, बल्कि अत्यन्त व्यापक, उदार तथा विश्वराज्यवादी था।

*Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies*

**संदर्भ**

सरन आर0 : (2009) – इनसाइक्लोपीडिया ऑफ एमिनेन्ट थिन्कर्स; एक्सिस प्रकाशन, दिल्ली ।

सिंह एन0: (2010) – पॉलिटिकल थॉट्स ऑफ पं. दीनदयाल उपाध्याय; राखी
प्रकाशन,आगरा।

वर्मा प्रदीप : (2012) – पं. दीनदयाल उपाध्याय का राजनीतिक चिन्तन; कोमल प्रकाशन, जयपुर।

पं दीनदयाल उपाध्यायः (.....) – राष्ट्र जीवन की दिशा, पृ. 49

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies